मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों में विश्व कल्याण की भावना

क्रांति
शोधार्थी
हिंदी विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

मनोहरश्याम जोशी ने उत्तर आधुनिक दृष्टि से देश की समसामयिक परिस्थितियों, यथार्थ एवं सामाजिक संबंधों को अपनी रचनाओं में उकेरा है। जोशी जी ने व्यक्ति व समाज के परस्पर संबंधों का यथार्थ प्रस्तुत कर नि:संदेह युगीन संवेदनाओं द्वारा विश्व कल्याण की भावना का प्रसार किया है।

आज विश्व में विभिन्न वस्तुओ, मान्यताओं व भ्रमों आदि को लेकर अनिश्चितता की स्थिति बनी हुई है। व्यक्ति असमंजस में है कि किसे सच माने और किसेझूठ। सत्यासत्य का निर्णय करना उसके लिए सरल नहीं है। ऐसी भयावह, विभ्रम की स्थिति में व्यक्ति स्वयं को किस प्रकार संतुलित करके निर्वाह करे, यही मार्गदर्शन जोशी जी करते हैं। आज जीवन में घटित होने वाली घटनाओं के सबंध में भी अनिश्चय सदैव बना रहता है क्योंकि परिस्थितियां इनती विषम होती हैं कि तथ्य तक पहुंचपाना अत्यधिक कठिन होता है और यहां तक कि कई बार असंभव होता है। इसीलिए 'ट–टा' के बेटे यतीश की आत्महत्या के संबंध में जोशी जी का कथन है "आधुनिक नौजवान ने आत्महत्या का इतना घटिया तरीका क्यों अपनाया होगा? अपनी समलैंगिकता से घबराकर या अपने पिता और मिस येन के संबंध से आक्रांत होकर"।[1]

इस उत्तर आधुनिक समाज में व्यक्ति की विद्रूपता और घिनौनापन हमें जोशी जी के पात्रों में दिखाई देता है। 'हमज़ाद' और 'कुरू–कुरू स्वाहा' जैसे उपन्यासों में जोशी जी ने विश्व बिरादरी के समक्ष सभ्य व नागरिक समाज में जीवन जीने वाले तथाकथित सभ्य लोगों की हकीकत को व्यंग्यात्मक रूप में हमारे सामने उजागर करके एक प्रकार से विश्व कल्याण की भावना का ही संचार किया है। नि:संदेह आज के विज्ञान उन्मुख समाज का ढांचा बहुत कुछ बदल गया है। जोशी जी ने हमारे समाज में होने वाले परिवर्तनों तथा व्यक्ति के अन्त:संबंधों का यथार्थ प्रस्तुत करके समाज कल्याण में योगदान दिया है। जोशी जी ने अपनी युगीन सीमाओं को लांघते हुए विश्व कल्याण की भावना का हृदय से भव्य स्वागत किया है।

प्रथम दृष्ट्या इनकी रचनाओं के पात्र हमें कुछ अश्लील व घिनौने प्रतीत होते हैं किंतु तत्काल वही पात्र हमें हमारे आस–पास जीवंत होते प्रतीत होते हैं। इस प्रकार मनोहर श्याम जोशी जी के उपन्यास अत्याधुनिक वैज्ञानिक युग का निष्कर्ष कहे जा सकते हैं, जिसमें कि पात्र और घटनाएं ग्लोबव्यापी और शत प्रतिशत यथार्थ हैं। जोशी जी ने मानवता की पुनर्स्थापना के लिए इस उत्तर आधुनिक युग में व्यक्ति में विश्व बंधुत्व और विश्व कल्याण की भावना जागृत करने का प्रयास अपने औपन्यासिक यथार्थ के माध्यम से किया है। आज मनुष्य जीवन असंतोष से भरा हुआ है। वह अपनी सफलता से संतुष्ट नहीं है और उत्तोत्तर सफलता की लालसा उसे लगातार असंतुष्ट करती रहती है। 'कसप' का 'डी.डी.' सफलता और यश प्राप्त करने के बाद भी मानसिक अवसाद से ग्रस्त होकर रोने लगता है। जोशी जी ने उसकी इस मानसिक अवस्था का संभावित कारण बताते हुए लिखा है, "ऐसा तो नहीं कि यह अपनी प्रस्तावित फिल्म की पटकथा के इस मुद्दे से दु:खी होकर रो रहा है कि बच्चा देबिया भविष्य है और अधेड़ देवीदत्त अतीत।[2]

अराजकता और पराजय के क्षणों में, जब व्यक्ति का मनोबल क्षीण होने लगता है, जाशीजी साहित्य के शाश्वत सनातन सत्य को स्वर देकर हमारे पराजित मनोबल को संबल प्रदान करते हुए 'हमजाद' में कहते हैं कि "दुनिया जन्नत भले न हो, दोजख भी नहीं है। हर इंसान में कुछ अच्छाइयाँ होती हैं तो कुछ बुराइयाँ भी। परवरदिगार ने अंधेरा बनाया तो रोशनी भी। बनाते एमय इस बात का पूरा ध्यान रखा कि इन्सानियत हैवानियत पर हावी हो सके।"[3]जोशी जी ने समाज को संदेश दिया है कि जो जैसा करता है उसका हश्र भी वैसा ही होता है।

आज मनुष्य मिल–बाँटकर खाने की बजाय छीनकर खाने की ओर अग्रसर हो रहा है जबकि हमारी प्राचीन संस्कृति स्वहित की जगह मानव मात्र के हित का उपदेश देती आई है। बढ़ती हुई धन–लोलुपता और उपभोक्ता संस्कृति की लाभ–हानि वाली दृष्टि हमें उन उपदेशों को भूलने के लिए बाध्य कर रही है। विषम परिस्थितियों और जीवन की विसंगतियों के बीच जोशी जी हमें हमारे अतीत से पुनः जोड़कर मानवता के युगसत्य को पुनर्स्थापित करते हुए विश्व कल्याण की भावना का नया संदेश देते हैं।

संदर्भ संकेत :

१. ट–टा प्रोफेसर, मनोहर श्याम जोशी, पृष्ठ ९१
२. कसप, मनोहर श्याम जोशी, पृष्ठ १०५
३. हमज़ाद, मनोहर श्याम जोशी, पृष्ठ ६०

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com